Journal of Advances in Science and Technology
Vol. 13, Issue No. 2, March-2017, ISSN 2230-9659

जनजातीय क्षेत्र का साक्षरता परिदृश्य (बांसवाड़ा जिले के विशेष सन्दर्भ में जनगणना 2001 व 2011 पर आधारित)

Dr. Santosh Anand*

Associate Professor, (Geography), Shri M.L.V Government PG College, Bhilwara, Rajasthan

सारांश – ***शिक्षा जैसी अमूल्य धरोहर का मानव जीवन के सर्वांगीण विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान है। शिक्षा से सतत् पर्यावरण विकास और समावेशी विकास का मार्ग प्रशस्त होता है। 21 वीं सदी के इस प्रथम दशक में अध्ययन क्षेत्र में साक्षरता का तुलनात्मक रूप से कम विस्तार हुआ है। बाँसवाड़ा जिले की साक्षरता राष्ट्रीय तथा राज्य के साक्षरता स्तर से निम्न है जिसका मुख्य कारण आदिवासी संस्कृति, गरीबी, स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्या, जागरूकता की कमी तथा शैक्षिक आधारभूत संरचना का अभाव आदि हैं। वही तुलनात्मक रूप से साक्षरता वृद्धि दर की गति उच्च है जिससे यह आशा है कि यह जिला भी राष्ट्रीय व राज्य साक्षरता स्तर के समकक्ष आ जाऐगा।***

----------♦----------

प्रस्तावना

शिक्षा में ज्ञान, उचित आचरण, तकनीकी दक्षता, विवेक, तर्कशक्ति और शिक्षण समाविष्ट हैं। शिक्षा, समाज में सदैव चलने वाली सोद्देश्य सामाजिक प्रक्रिया है। मानव जीवन रूपी ढाँचा ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना है। मानवीय जीवन के दो प्रमुख पहलू हैं। प्रथम पहलू जिसमें जैविक व जीवों से निमित्त (इसमें मानव की जैविक जरूरत व क्रियाऐं शामिल की जाती हैं।) तथा दूसरा जिसमें सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक पक्ष सम्मिलित हैं। जहाँ जीवन के विकास एवं संवर्द्धन के लिए भोजन एवं प्रजनन जैविक जीवन को बनाऐं रखने के लिए आवश्यक हैं, वही मानव जीवन में शिक्षा सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक विकास व सरंचना के लिए आवश्यक है। वर्तमान परिदृश्य में शिक्षा भी रोटी, कपड़ा और मकान आदि की तरह मूलभूत आवश्यकता बनती जा रही है। निरक्षरता या अशिक्षा मानव को अज्ञानी, विवेकहीन, रुढ़िवादी व धर्म भीरू बनाती है, साथ ही अशिक्षा उसके स्वाभिमान पर भी कुठाराघात करती है। निरक्षरता से समाज आधुनिक युग में विकास की गति में पिछड़ जाता है तथा इसका प्रभाव विशेषकर ग्रामीण अंचल तथा महिलाओं पर पड़ता है जो कि राष्ट्र के समावेशी विकास एवं अर्थव्यवस्था के लिए अशुभ संकेत होता है। निरक्षरता व अज्ञानता के कारण गरीबी एवं मानसिक एकाकीपन आता है। जिससे शान्तिपूर्ण एवं मैत्रीपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों, आर्थिक विकास एवं राजनैतिक प्रौढ़ता में अवरोध आता है।

शिक्षा व्यक्ति के उन गुणों का विकास करती है जिससे वह अपनी समस्याओं का समाधान कर सके एवं अपने पर्यावरण से सामंजस्य स्थापित कर सके। इसी महत्ता के कारण भारत में 86वें संविधान संशोधन द्वारा 6-14 आयु वर्ग के प्रत्येक बच्चे को मुक्त और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार दिया गया है तथा निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 01 अप्रैल, 2010 से सम्पूर्ण भारत में लागू किया गया। शिक्षा का तात्पर्य मनुष्य की चेतना शक्ति व विवेक हेतु आत्मविश्वास या आत्मबोध से है जबकि साक्षरता अकादमिक शिक्षा है जो हमें सूचना और ज्ञान प्रदान करती है। साक्षरता का तात्पर्य है पढ़ने व लिखने की क्षमता से युक्त होना है अर्थात् वह व्यक्ति जिसकी आयु 7 साल या इससे अधिक हो और वह किसी भाषा को समझकर पढ़-लिख सके साक्षर कहलाता है। साक्षरता का अन्य जनांकिकीय लक्षणों जैसे- उत्पादकता, मत्र्यता, लिंगानुपात, व्यवसाय आदि पर भी प्रभाव पड़ता है इसलिए साक्षरता प्रतिरूप, समाज के सामाजिक व आर्थिक विकास की गति का सूचक है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन क्षेत्र बाँसवाड़ा की स्थिति साक्षरता में दयनीय है। यहाँ का साक्षरता स्तर विशेषकर महिलाओं का राष्ट्र

www.ignited.in

व राज्य से बहुत पिछड़ा हुआ है। इस पिछड़ेपन का मुख्य कारण गरीबी, बीमारी, अज्ञानता तथा आर्थिक विकास का न होना है। वर्तमान में स्थानीय प्रशासन व सरकार इस क्षेत्र में विकास के लिए निरन्तर प्रयासरत है तथा साक्षरता वृद्धि दर भी तुलनात्मक रूप से अधिक है जिससे यह प्रदेश भी अपने पिछड़ेपन के अतीत से बाहर निकल आयेगा। इसमें गोविन्द गुरु जनजाति विश्वविद्यालय बाँसवाड़ा की भी अहम भूमिका रहेगी।

अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत शोध अध्ययन राजस्थान के बाँसवाड़ा जिले की साक्षरता का तुलनात्मक विश्लेषण (जनगणना 2001 व 2011 पर आधारित) तक सीमित है। राजस्थान के सुदूर दक्षिणी भाग में स्थित बाँसवाड़ा जिला प्रदेश का सीमान्त जिला है। इस जिले की आकृति चतुष्कोणीय है। इसके दक्षिण पूर्वी भाग में मध्यप्रदेश राज्य के रतलाम व झाबुआ जिलों की सीमाऐं, दक्षिण में गुजरात राज्य के दाहोद जिले की सीमा, पश्चिम में डूँगरपुर जिले की तथा उत्तर में प्रतापगढ़ जिले की सीमा है। बाँसवाड़ा जिला 23011' उत्तरी अक्षांश से 23056' उत्तरी अक्षांश तथा 73058' पूर्वी देशान्तर से 74047' पूर्वी देशान्तरों के मध्य स्थित है। इस जिले का क्षेत्रफल 5037 वर्ग किलोमीटर है। जिल में वर्तमान में 11 तहसील, 11 विकास ब्लॉक, 346 ग्राम पंचायते और 1532 गाँव हैं। "सौ द्वीपों के शहर" के नाम से प्रसिद्ध इस जिले की मुख्य नदी माही तथा जलवायु आर्द्र है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. राजस्थान के बाँसवाड़ा जिले में पिछले एक दशक में साक्षरता दर में हुए तुलनात्मक परिवर्तन का अध्ययन करना।

2. बाँसवाड़ा जिले में साक्षरता की यथास्थिति का ब्लॉकवार विश्लेषण करना।

साक्षरता में बाँसवाड़ा जिले की राष्ट्र व राज्य के संदर्भ में स्थिति

बाँसवाड़ा जिले की कुल साक्षरता दर का तुलनात्मक अध्ययन

क्षेत्र	कुल साक्षरता व वृद्धि दर प्रतिशत में		
	2001 में	2011 में	वृद्धि दर
भारत	64.84	74.04	9.20
राजस्थान	60.41	66.11	5.70
बाँसवाड़ा	45.54	56.33	10.79

(स्त्रोत : भारतीय जनगणना प्रतिवेदन 2001 व 2011)

जनगणना 2001 के अनुसार भारत की साक्षरता दर 64.84 प्रतिशत थी, जो 2011 में बढ़कर 74.04 प्रतिशत हो गई। इस एक दशक में वृद्धि दर 9.20 प्रतिशत रही। राजस्थान की साक्षरता दर 2001 में 60.41 प्रतिशत थी जो 2011 में 5.7 प्रतिशत की दर से बढ़कर 66.11 प्रतिशत हो गई। वही जिले की साक्षरता दर 45.54 प्रतिशत से बढ़कर 56.33 प्रतिशत हो गई तथा 10.79 प्रतिशत की वृद्धि दर रही।

बाँसवाड़ा जिले की पुरुष साक्षरता दर का तुलनात्मक अध्ययन

क्षेत्र	पुरुष साक्षरता व वृद्धि दर प्रतिशत में		
	2001 में	2011 में	वृद्धि दर
भारत	75.26	82.14	6.88
राजस्थान	75.70	79.19	3.49
बाँसवाड़ा	61.50	69.48	7.98

(स्त्रोत : भारतीय जनगणना प्रतिवेदन 2001 व 2011)

वर्ष 2001 में भारत की पुरुष साक्षरता दर 75.76 प्रतिशत थी जो 6.88 प्रतिशत की दर से बढ़कर 82.14 प्रतिशत हो गई। इसी प्रकार राजस्थान की पुरुष साक्षरता दर 2001 में 75.70 प्रतिशत

www.ignited.in

थी, जो 3.49 प्रतिशत की वृद्धि दर से 2011 में 79.19 प्रतिशत हो गई। वही अध्ययन क्षेत्र बाँसवाड़ा जिले की पुरुष साक्षरता 61.50 प्रतिशत से बढ़कर 69.48 प्रतिशत हो गई तथा वृद्धि दर 7.98 प्रतिशत रही।

बाँसवाड़ा जिले की महिला साक्षरता दर का तुलनात्मक अध्ययन

क्षेत्र	महिला साक्षरता व वृद्धि दर प्रतिशत में		
	2001 में	2011 में	वृद्धि दर
भारत	53.67	65.46	11.76
राजस्थान	43.85	52.12	8.27
बाँसवाड़ा	29.22	43.06	13.84

(स्त्रोत : भारतीय जनगणना प्रतिवेदन 2001 व 2011)

कुल साक्षरता व पुरुष साक्षरता के साथ ही जिले की महिला साक्षरता दर में भी वृद्धि राष्ट्र व राज्य की तुलना में बेहत्तर रही। 2001 में राष्ट्रीय महिला साक्षरता दर 53.67 प्रतिशत थी, जो 11.76 प्रतिशत की दर से बढ़कर 65.46 प्रतिशत हो गई। इसी प्रकार राजस्थान की महिला साक्षरता दर 2001 में 43.85 प्रतिशत थी जो 8.27 प्रतिशत की दर से बढ़कर 52.12 प्रतिशत हो गई। वही बाँसवाड़ा जिले की महिला साक्षरता 2001 में मात्र 29.22 प्रतिशत थी जो 2011 में बढ़कर 43.06 प्रतिशत हो गई। महिला साक्षरता की दशकीय वृद्धि दर 13.84 प्रतिशत रही।

जिले की दशकीय साक्षरता वृद्धि दर का विश्लेषण

कुल साक्षरता, पुरुष साक्षरता तथा महिला साक्षरता की वृद्धि में राष्ट्र, राजस्थान तथा शोध क्षेत्र बाँसवाड़ा जिले का प्रदर्शन भिन्न-भिन्न रहा है। सिर्फ वृद्धि दर की बात की जाऐ तो बाँसवाड़ा जिले की वृद्धि दर बेहत्तर रही जिससे भविष्य में यह आदिवासी जिला भी राष्ट्र व राज्य के साक्षरता स्तर तक जल्द ही पहुँच जाऐगा।

साक्षरता वृद्धि दर का तुलनात्मक आरेख

(वृद्धि दर प्रतिशत में)

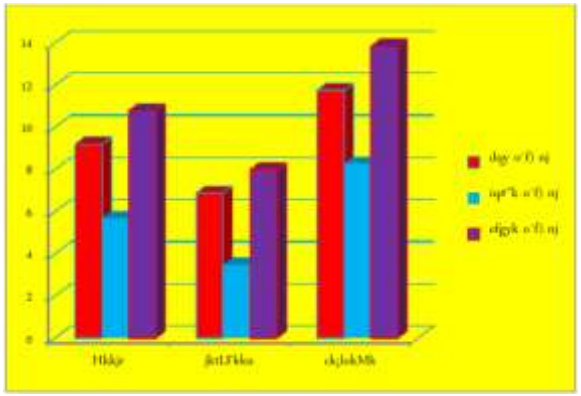

भारतीय जनगणना 2001 व 2011 में भारत की कुल दशकीय साक्षरता वृद्धि दर 9.20 प्रतिशत, पुरुष साक्षरता वृद्धि दर 6.88 प्रतिशत तथा महिला साक्षरता वृद्धि दर 11.76 प्रतिशत रही। राजस्थान की कुल साक्षरता वृदि दर 5.7 प्रतिशत, पुरुष साक्षरता वृद्धि दर 3.49 प्रतिशत तथा महिला साक्षरता वृद्धि दर 8.27 प्रतिशत रही। इसी प्रकार बाँसवाड़ा जिले की कुल साक्षरता वृद्धि दर 10.79 प्रतिशत, पुरुष साक्षरता वृद्धि दर 7.98 प्रतिशत तथा महिला साक्षरता वृद्धि दर 13.84 प्रतिशत रही। इस प्रकार हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि बाँसवाड़ा जिले का साक्षरता स्तर तुलनात्मक रूप से कम है लेकिन वृद्धि दर अपेक्षाकृत अधिक है।

बाँसवाड़ा जिले में ब्लॉक स्तर पर साक्षरता की स्थिति

जनगणना 2011 के अनुसार जिले में साक्षरता का स्तर ब्लॉकवार भी विषमता लिए हुए है। 2011 की जनगणनानुसार बाँसवाड़ा जिले में कुल आठ ब्लॉक (जिले में वर्तमान में 11 ब्लॉक हैं।) हैं। जिनमें से गढी, बाँसवाड़ा तथा बागीदौरा ब्लॉक का साक्षरता स्तर अन्य ब्लोकों की तुलना में उच्च है। वही कुशलगढ़, छोटी सरवन तथा सज्जनगढ़ ब्लॉक का साक्षरता स्तर जिले के औसत से काफी कम है जो चिन्ता का विषय है।

ब्लॉक स्तर पर साक्षरता की स्थिति (2011 की जनगणनानुसार)

ब्लॉक	कुल साक्षरता	पुरुष	महिला
घाटोल	53.65	68.79	38.62
गढ़ी	62.79	76.38	49.09
बाँसवाड़ा	56.99	72.68	41.16
छोटी सरवन	46.16	59.03	32.85
आनन्दपुरी	54.15	66.83	41.25
बागीदौरा	54.55	67.62	41.30
कुशलगढ़	42.23	54.14	30.34
सज्जनगढ़	49.99	62.82	36.97

(स्त्रोत : आर्थिक एवं सांख्यिकीय विभाग, बाँसवाड़ा)

www.ignited.in

तालिका अवलोकन से पता चलता है कि गढ़ी ब्लॉक की साक्षरता की स्थिति सबसे बेहत्तर है। यहाँ कुल साक्षरता दर 62.79 प्रतिशत, पुरुष साक्षरता दर 76.38 प्रतिशत तथा महिला साक्षरता दर 49.09 प्रतिशत है। जिसका मूल कारण यहाँ की सामाजिक व आर्थिक स्थिति ठीक होना है। वहीं सबसे कम साक्षरता कुशलगढ़ ब्लॉक की है। यहाँ पर कुल साक्षरता दर 42.23 प्रतिशत, पुरुष साक्षरता दर 54.14 प्रतिशत तथा महिला साक्षरता दर सिर्फ 30.34 प्रतिशत है। इसका कारण यहाँ अनुसूचित जनजाति का अधिक होना है जो अभी तक समाज की मुख्यधारा में नहीं लोट सके हैं।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध अध्ययन क्षेत्र बाँसवाड़ा की साक्षरता दर में पिछले एक दशक से लगातार वृद्धि हुई है। स्त्री साक्षरता तुलनात्मक रूप से पुरुषो से बहुत ही कम है। जिसका मुख्य कारण स्त्रियों का कार्यक्षेत्र घर की चारदीवारी में सीमित होना, महिलाओं के आवागमन में कमी, शिक्षा और रोजगार का प्रभाव स्त्री अनुकूल कम होना, शिक्षा की सीमित उपलब्धि तथा गरीबी आदि हैं। सामान्य साक्षरता दर बढ़ने के साथ ही महिलाओं का साक्षर होना, सामाजिक व आर्थिक दृष्टि से आसान हो गया है। सर्व शिक्षा अभियान के प्रचार-प्रसार, विद्यालयों की निकटतम स्थिति, आर्थिक कार्यों में स्त्रियों की सहभागिता बढ़ने की वजह से स्त्री साक्षरता दर में वृद्धि हुई है। फिर भी स्त्री साक्षरता दर में वृद्धि के लिए अभी भी प्रयासरत रहने की बहुत आवश्यकता है। शिक्षा का वर्तमान सामाजिक व आर्थिक जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान है। पिछले दो दशकों में स्त्री पुरुष की साक्षरता दर में वृद्धि हुई है। जिसका मुख्य कारण ग्रामीण क्षेत्रों में बढ़ती सामाजिक, आर्थिक चेतना है। जिसकी वजह से लोगों के मन में शिक्षा प्राप्ति की भावना बलवती हो रही है।

सुझाव

बाँसवाडा जिले की साक्षरता देश व प्रदेश के साक्षरता स्तर से बहुत पीछे है। महिलाओं का साक्षरता स्तर तो ओर भी पिछड़ा हुआ है। अतः जिले की साक्षरता दर को बढ़ाने तथा अच्छी वृद्धि दर के लिए निम्नलिखित सुझाव मुख्य हैं:-

- सामाजिक चेतना व जागरूकता बढ़ाने हेतु सभी सरकारी योजनाओं व कार्यक्रमों का पर्याप्त प्रचार-प्रसार होना चाहिए।
- शैक्षिक संस्थाओं, कल्याणकारी योजनाओं तथ शत-प्रतिशत नामांकन जैसे कार्यक्रमों के साथ-साथ अनुदानित और पोषण कार्यक्रमों को बढ़ावा देना चाहिए।
- बालिका शिक्षा, प्रौढ़ साक्षरता और गैर संस्थागत शैक्षिक कार्यक्रमों को प्रभावी रूप से क्रियान्वित करना चाहिए।
- शिक्षा से सम्बन्धित आधारभूत संरचना को बढ़ावा तथा गुणवत्ता में सुधार के साथ-साथ पर्याप्त शिक्षकों की नियुक्ति होनी चाहिए।
- गरीबी, स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं और सामाजिक-आर्थिक विकास को विशेष प्राथमिकता देनी चाहिए ताकि लोग शिक्षा जैसी अमूल्य धरोहर की उपयोगिता समझ सके।
- आदिवासी संस्कृति अनुकूल बालिका शिक्षा, छात्राओं हेतु आदर्श बालिका छात्रावास, छात्रवृति और उनके स्वास्थ्य व पोषण हेतु सुविधाओं में बढ़ोतरी करनी चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- Banergee, N. (1977) The pattern of sex ratio in Sanghbkurn District, Geographical Review of India Vol. 39, Pp, 30-37.
- Census info India 2001 and 2011
- Primary census abstract (2011) Registrar General of India, New Delhi.
- Bhende, A.A. (2014) Principles of Population studies, Hamalaya Publishing House, Mumbai.
- District census Handbook, Regional census office Rajasthan.

Website:-

- www.banswara.nic.in
- www.rajasthan.gov.in
- www.google.com
- www.ministryofcensus.gov.in
- www.plan.rajasthan.gov.in

Corresponding Author

Dr. Santosh Anand*

Associate Professor, (Geography), Shri M.L.V Government PG College, Bhilwara, Rajasthan